'यमदीप' में उपेक्षित किन्नर जीवन और उनकी मानवता

डॉ. सरिता बाबासाहेब बिडकर,
हिंदी विभाग,डॉ. घाळी कॉलेज,
गडहिंग्लज, जिला-कोल्हापुर।

साहित्यकार नीरजा माधव का 'यमदीप' उपन्यास उपेक्षित किन्नर जीवन और उनकी मानवता का असली दस्तावेज है। इसके माध्यम से उन्होंने किन्नर जीवन के विभिन्न पहलुओं को बखूबी ढंग से उठाया है। समाज में उपेक्षित, तिरस्कृत किन्नर समाज साहित्य में भी उपेक्षित ही रहा है। इस उपेक्षित समाज में आज के खोखले सफेदफोश समाज से भी ज्यादा मानवता, नैतिकता, प्रामाणिकता पायी जाती है। पग-पग पर अपमानित, पीड़ित यह समाज किसप्रकार अपना जीवन जीता है इसे केंद्र में रखकर ही नीरजा माधव ने यह उपन्यास लिखा है। आज के सभ्य से भी कई गुना ज्यादा मानवता और नैतिकता इस किन्नरों में पायी जाती है। इन किन्नरों को 'ट्रांसजेंडर', 'थर्ड जेंडर', 'हिंजडा', 'तृतीयपंथी' आदि कई नामों से जाना जाता है। उनका शरीर न स्त्री का और न पुरुष का होने के कारण जीवन जीते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। परिवारवाले और समाज की उपेक्षा भरी नजरें उनका जीना हराम कर देती हैं। फिर ऐसी हालत में भी यह समाज अपने समदुःखी साथियों के सहारे किसप्रकार जीवन जीता है, वे किसप्रकार एक-दूसरे के सुख-दुख में शामिल होते हैं इसका बेहतरीन ढंग से चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में किया है। अपने साथियों के बारे में तथा इस समाज के बारे में उनका मानवीय दृष्टिकोण देखकर इस सभ्य समाज को भी शर्म महसूस होगी।

15 अप्रैल, 2014 को इस किन्नरों को 'थर्ड जेंडर' या 'ट्रांसजेंडर' के रूप में कानूनी मान्यता मिल गई तब तक सरकारी दस्तावेजों में उनका उल्लेख भी नहीं था। ऐसे लोगों की जन्म से ही उपेक्षा शुरू हो जाती है। इस बच्चे का शरीर न स्त्री का और न पुरुष का होने के कारण उसके जन्म पर न माता-पिता को हर्ष होता है, न समाज को। प्रस्तुत उपन्यास में भी 'नाजबीबी' याने 'नंदरानी' के साथ भी यही होता है। एक मेजर के घर में

इस 'नंदरानी' का जन्म होता है। उसके जन्म के बाद दुश्मनों के साथ दो हाथ करनेवाले मेजर फूट-फूटकर रोने लगते हैं। घर में मातम-सा छा जाता है। वे इस बच्ची को पालने का निर्णय लेते हैं लेकिन यह राज किसी के सामने न खुले इसलिए भरसक प्रयास करते हैं। जब नंदरानी स्कूल जाती हैं तब अन्य लड़कियों के साथ पेशाब के लिए न जाना आदि कई प्रतिबंध माता-पिता द्वारा लगाएँ जाते हैं। फिर भी एक दिन शिक्षिका ने उसे पेशाब के लिए न छोड़ने के कारण स्कूल में पेशाब होने से राज खुल ही जाता है। स्कूल में और समाज में वह उपेक्षा की पात्र बन जाती है। यही से उसका 'नंदरानी' से 'नाजबीबी' तक का प्रवास शुरू हो जाता है। वह किन्नर होने के कारण भाई-बहनों की शादी तय होने में दिक्कत हो जाती है। इससे घर में भी वह उपेक्षित है। दूसरी ओर समाज की उपेक्षित नजरों के कारण उसका स्कूल छूट जाता है। इसप्रकार वह घर में समाज में उपेक्षित बनने के कारण घर त्याग देती है तथा हिंजडों याने किन्नरों की बस्ती में रहने के लिए जाती है। यहाँ वह 'नंदरानी' से 'नाजबीबी' बन जाती है। घर छोड़ते समय उसकी हुई मनोदशा का चित्रण करते हुए लेखिका लिखती हैं-"पर उस दिन के बाद से वह दृढ़ता विवश-सी होने लगी थी जब नंदिनी दीदी की कई शादियां केवल नंदरानी के कारण कटने लगीं। नंदन भइया के उस दिन के क्रोध और घृणा ने नंदरानी का एक झटके में वही निर्णय लेने को विवश कर दिया था, जिसे सोच-सोचकर उसका हृदय दहल जाता था।"[1] इसप्रकार घर और समाज में घृणा शुरू होने से वह घर त्याग देती है। ऐसा कई बच्चों के साथ होता है। कई बार माता-पिता द्वारा मजबूरन ऐसे बच्चों को त्याग दिया जाता है। एक बार त्याग दिए ऐसे बच्चे कैसे जीते हैं इसकी खबर तक नहीं ली जाती। यह हालत नाजबीबी की होती है। उसके साथ घरवाले रिश्ता तोड़ देते हैं। जब माँ के मृत्यु के बाद वह स्मशान में आती है तब लोग उसे हिंजडा कहकर तिरस्कृत नजरों से देखते हैं। घरवालों को भी उसका आना अच्छा नहीं लगता। इसप्रकार यह समाज किन्नरों के घर का रास्ता हमेशा-हमेशा के लिए बंद कर देता है। इसलिए इस उपेक्षित किन्नर जीवन की तुलना लेखिका ने 'यमदीप' से की है। दीपावली की पूर्वसंध्या पर घर के बाहर घूरे पर जलाए जानेवाले दीप को यमदीप कहा जाता है। घूरे पर जलाए जानेवाले इस यमदीप को फिर पलटकर नहीं देखा जाता।

यम से संवाद करने के लिए उसे छोड़ दिया जाता है, वही हालत घर से बेदखल किए किन्नरों की भी है। इस संदर्भ में डॉ. बृजबाला सिंह लिखती हैं-"दीपावली की पूर्वसंध्या में घर से बाहर घूरे पर जलाया गया दीपक जो प्रकाश तो टिम-टिम कर बिखेरता है, आलोक जगाता है किन्तु उसे यमदीप (यम के लिए जलाया गया दीप) कहकर कोई पलटकर देखता तक नहीं। उसकी पूजा-अर्चना, आरती कुछ नहीं होती। वह दीप होकर अनादृत है। अभिशक्त है।"[2] यही हालत किन्नर जीवन की भी है। फिर भी इस उपेक्षित, पीड़ित वर्ग में एक अनोखी संवेदनशीलता और मानवता का दर्शन होता है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने इसे बखूबी ढंग से चित्रित किया है।

उपन्यास के प्रारंभ में ही किन्नरों की मानवता का दर्शन होता है। नाजबीबी अपने साथियों की मदद से प्रसव पीड़ा से तड़फती पगली औरत को उसकी पीड़ा से मुक्त करती है। इस दौरान मजाक देख रही स्त्रियों को जब मदद की अपील की जाती है तब वह मुँह मोड़ लेती हैं। यह स्त्रियाँ बच्चे को ढकने के लिए कपड़ा तक नहीं देती। यह मानवता के लिए बहुत बड़ा लांछन है। पगली की पीड़ा को देखकर किन्नरों को दया आती है लेकिन समाज को नहीं। इसलिए नाजबीबी इस इन्सान जात को बहुत कोसती है। वह पगली को इस हालत में छोड़कर जाना उचित नहीं समझते। इसलिए वह कहती है-"अब कोई पूछनहार नहीं इसका तो क्या हम भी छोड़ जाएंगे? अरे हम हिंजडे हैं, हिंजडे.... इनसान हैं क्या जो मुंह फेर लें।"[3] इसप्रकार सभी हिंजडे याने किन्नर मिलकर उस पगली महिला की प्रसुति करते हैं। इसमें उस महिला की मौत होती है लेकिन सुंदर बच्ची पैदा हो जाती है। नाजबीबी उस बच्ची को आसपास के घरों में जाकर पालने की अपील करती हैं लेकिन कोई तैयार नहीं होता। सभी उसकी ओर घृणा से देख मुंह मोड़ लेते हैं लेकिन ममता और मानवता से भरा नाजबीबी का हृदय उसे गले लगाता है। वह इस बच्ची को इसी हालत में छोड़ना उचित नहीं समझती। वह कहती हैं-"किसके भरोसे छोड़े वह इस बच्ची को? कोई पालने को तैयार नहीं। ऐसे छोड़ देने पर कहीं कुत्ते-कौवे नोचकर.... नहीं.... नहीं....उसने बच्ची को और सावधानी से थाम लिया।"[4] इसप्रकार वह बच्ची को खुद पालने का निर्णय लेती है लेकिन हिंजडे की बस्ती में इसप्रकार बच्ची को पालना इतना आसान काम नहीं

था। उन्हें चोरी का बच्चा समझकर पुलिस द्वारा पकड़ने का भय था। फिर भी मानवता भरा हृदय यह खतरा मोल लेता है। वह बच्ची को छिपाते-छिपाते घर ले आती है। इन हिंजड़ों की बस्ती की और एक विशेषता है कि मिल-मिलजुलकर रहना और अपने गुरु के आदेश का पालन करना। महताब गुरु के आदेश से अन्य अन्य हिंजड़े याने किन्नर मानवता की भावना से बच्ची को पालने के लिए नाजबीबी को मदद करते हैं। नाजबीबी का पूरा समय बच्ची की परवरिश में जाता है इसलिए अन्य हिंजडे अपने कमाई का कुछ हिस्सा नाजबीबी को देते हैं। उनकी दृष्टि से यह मानवता का काम है और दुनिया में मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है। बच्ची के नामकरण और उसके धर्म संदर्भ में जब चर्चा छिड़ती हैं तब महताब गुरु के उदात्त विचार सामने आते हैं। वे कहते हैं-"अरे दुर्र रे धरम्! रात-बिरात एक पागल के साथ मुंह काला किया, धरम की बात पर....थू है ऐसे धरम पर, और ऐसे धरमवालों पर। इसका नाम रहेगा, सोना। सारे धरम में सोना, सोना होता है- कीमती, चमकदार। सब अपने तन पर पहनते हैं। चाहे हिंदू, चाहे मुसलमान। रही इसके धरम की बात तो नाजबीबी पैदाइशी हिंदू है, इसलिए सोना को पालने के कारण सोना का धरम भी हिंदू धरम। चल सारा झगड़ा खतम। अभी सोना सबकी है। बड़ी होगी तो हिंदू होगी। उसका मन होगा तो...जिससे मन चाहेगा उससे शादी कर लेगी।"[5] कितनी बड़ी उदात्तता। मानवता धर्म भी तो यही सिखाता है। आज धर्म के नाम पर सांप्रदायिकता फैलानेवालों के लिए यह बहुत बड़ी चपराक है।

सोना बड़ी होकर स्कूल जाने लगती हैं। नाजबीबी अच्छी तरह से उसका खयाल रखती है। जिस बच्ची को नाजाय संबंध से पैदा हुई औलाद समझकर ठुकराया उसे नाजबीबी ने बड़ी उदारता से अपनाया। इससे बड़ी मानवता क्या हो सकती है? इस संदर्भ में भारती अग्रवाल लिखती हैं-"दैहिक दृष्टि से भिन्न समाज से तिरस्कृत तृतीय लिंग मानवीयता की मिसाल पेश करता है। मानव कहे जानेवाले लोग जिस सीमा पर आकर मानवीयता से किनारा कर लेते हैं। वहाँ निरंतर अनदेखा किए जाने वाले किन्नर समाज की मानवीयता का पक्ष हमारे समक्ष खुलता है। फिर चाहे वह नाजबीबी हो, छैलू या फिर चमेली या महताब गुरु सभी का चरित्र गरिमामय उपस्थिति दर्ज करता है।"[6] इसप्रकार

मानवीयता का दर्शन तिरस्कृत किन्नर समाज में दिखाई देता है। पहले दो जून की रोटियों के लिए उन्हें कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं। पेट के लिए किसी के घर में बच्चा पैदा होने पर नाच-गाना करना, ट्रेन या बस में लोगों से पैसे माँगकर मुश्किल से गुजारा करना पड़ता है। न उनकी ओर सरकार का ध्यान है न समाज का। ऐसी हालत में नाजबीबी बच्ची की परवरिश में अटक जाने से उसे यह काम बोझिल लगने लगता है। उसे अपनी गलती का एहसास होता है लेकिन दूसरी ओर उस असहाय बच्ची को देखकर उसके मन में दया-भाव उमड़ आता है। वह अपने मन को ही समझाते हुए कहती हैं-"अपने लिए तो जानवर भी जी लेते हैं। हमें भी तो भगवान ने जानवर से भी बदतर बना रखने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी थी। हो सकता है इस बच्ची के रूप में इनसान की सेवा से अगला जनम सुधर जाए। शायद इसीलिए भगवान ने उसके पास इस रूप में सोना को भेज दिया है।"[7] कितना बड़ा है किन्नरों का मानवीय दृष्टिकोण। जो समाज उन्हें समाज का हिस्सा न मानकर उपेक्षित दृष्टि से देखता है, वे समाज के बारे में कितना उदात्त सोचते हैं। इतना ही नहीं तो सोना के बारे में पुलिस को भनक लगने पर वे उसे नारी सुधारगृह में भरती करते हैं तब नाजबीबी की दशा बहुत दयनीय होती है। उसका किसी बात में मन नहीं लगता वह बार-बार सोना के बारे में ही विचार करती है। सोना को पुलिस ले जाने के बाद नाजबीबी की मनोदशा का चित्रण करते हुए लेखिका लिखती हैं-"सोना के जाने के बाद तो जैसे सभी कामों ने उससे नाता ही तोड़ लिया था। गुमसुम-सी कोठरी में बैठी वह सोना की छोड़ी फ्राॅक को उलटती-पलटती रहती। विहल होने पर कभी उसे होठों से लगा चूमती तो कभी सूंघकर सोना की सुगंध याद करती।"[8] क्या रिश्ता है दोनों के बीच? समाज में उपेक्षित किन्नर में इतनी बड़ी ममता और मानवता आज समाज में कहाँ दिखाई देती है।

इसप्रकार किन्नरों की मानवीयता के संदर्भ में कई उदाहरण 'यमदीप' उपन्यास में मिलते हैं। लिंग के आधार पर समाज, परिवारवालें उन्हें उपेक्षित बनाते हैं लेकिन उनके साथी उन्हें उपेक्षित नहीं बनने देते। बड़े दिल से उन्हें अपनाते हैं। इस किन्नर समाज में गुरु का आदेश प्रमाण माना जाता है। वे अपनी कमाई का कुछ निश्चित हिस्सा अपने

गुरु के पास जमा करते हैं। यह राशि उनके हिंजडे की बस्ती के बीमार, बूढ़े लोग और हिंजडो की देवी बुचरा माता के नाम से खर्च की जाती है। गुरु के आदेश के अनुसार बीमार लोगों की सेवा-टहल की व्यवस्था की जाती है। प्रस्तुत उपन्यास में महताब गुरु हिंजडों के गुरु हैं। गुरु द्वारा नियुक्त हिंजड़े बीमार लोगों की सेवा करते हैं। बीमार व्यक्ति और उसकी सेवा करनेवाले व्यक्ति का खर्च अन्य हिंजडों की कमाई से किया जाता है। इतनी बड़ी मानवता आज के सभ्य समाज में कहाँ दिखाई देती है? इस संदर्भ में नीरजा माधव लिखती हैं-"गुरुजी पूरे शहर के हिंजडों के गुरु हैं। हिंजडा समुदाय में उनकी ही बात चलती है। उनका अनुशासन सर्वोपरि है। उनका निर्णय सर्वमान्य है। कब, किसे, किस क्षेत्र में नाचना-गाना है? किसी के बीमार होने पर किसे उसकी सेवा-टहल करनी है? उसकी कमाई न होने पर भी उसका एक हिस्सा गुरुजी के पास सुरक्षित हो जाता है। वैसे भी अपनी कमाई का एक मोटा हिस्सा गुरुजी के पास ईमानदारी से जमा कर देना शहर के तमाम हिंजडों का प्रतिदिन का नैतिक दायित्व है। इस कर्तव्य से कोई भी हिंजडा मुक्त नहीं हो सकता।"[9] इसप्रकार मानवीयता की भावना हर हिंजड़े याने किन्नरों में दिखाई देती है। प्रस्तुत उपन्यास की नाजबीबी, चमेली, शबनम, मंजू, अकरम, छैलू आदि अपना-अपना फर्ज निभाते हैं। छैलू नया-नया इन किन्नरों में शामिल हुआ है। इसलिए वह बाहर कमाई के लिए जाना हिचकिचाता है। इसलिए वह बस्ती में रहकर बीमार साथियों की सेवा करता है। महताब गुरु बूढ़े होने के कारण बाहर नहीं जा सकते। इसलिए उन्हें अपने गुरु के रूप में चुना गया है। वे सभी पर अपनी निगरानी रखते हैं। उनकी जीविका के लिए अन्य किन्नरों की कमाई से हिस्सा मिलता है। इसप्रकार उदार मानवता उपेक्षित किन्नर समाज में पायी जाती है।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि रचनाकर नीरजा माधव का 'यमदीप' उपन्यास उपेक्षित किन्नर जीवन और उनकी मानवता का असली दस्तावेज है। इसमें किन्नर जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। इस उपेक्षित किन्नर समाज में कूट-कूटकर भरी हुई मानवता, नैतिकता और प्रामाणिकता नाजबीबी, चमेली, शबनम, मंजू, अकरम,

छैलू, महताब गुरु आदि पात्रों के माध्यम से दिखाई देती है। जो समाज को किन्नरों की ओर व्यापक दृष्टि से देखने को दृष्टि प्रदान करता है।

संदर्भ:

1. नीरजा माधव, यमदीप, सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली, सं. 2018, पृ.250
2. सम्पादक डॉ. एम. फीरोज खान, थर्ड जेण्डर पर केंद्रित हिंदी का उपन्यास यमदीप, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. 2018, पृ. 29
3. नीरजा माधव, यमदीप, पृ. 12
4. वही, पृ. 13
5. वही, पृ. 22
6. सम्पादक डॉ. एम. फीरोज खान, थर्ड जेण्डर पर केंद्रित हिंदी का उपन्यास यमदीप, पृ. 162
7. नीरजा माधव, यमदीप, पृ. 25
8. वही, पृ. 266
9. वही, पृ. 16